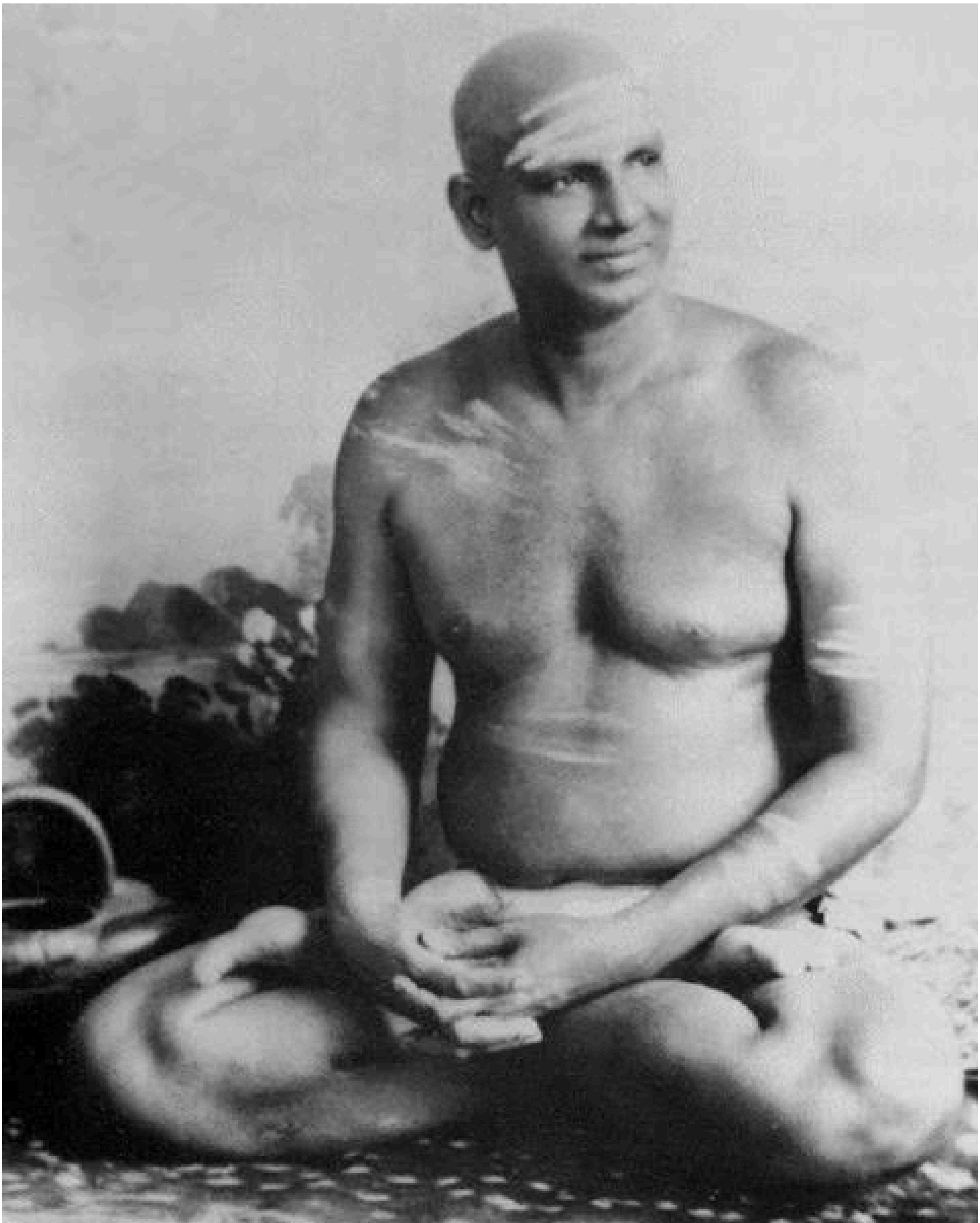
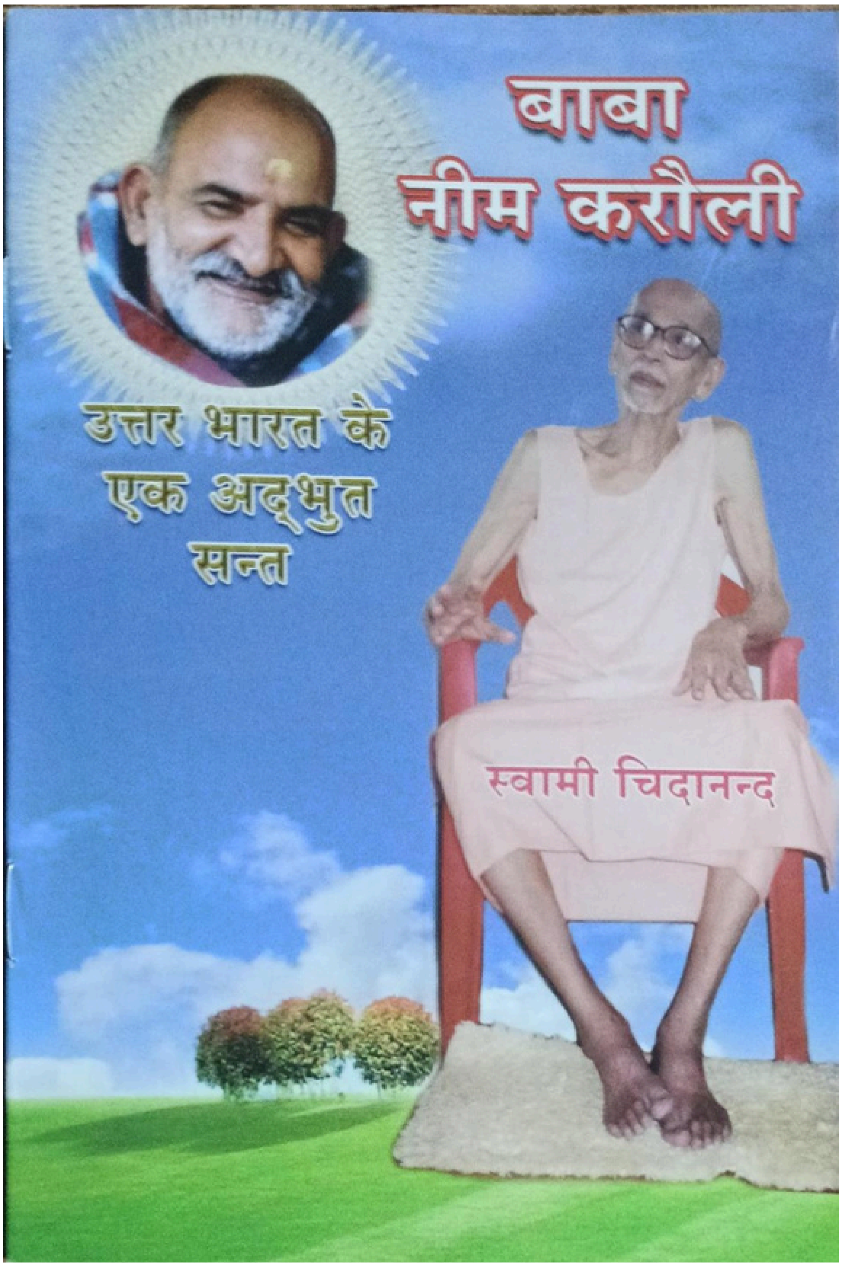



बाबा
नीम करौली
उत्तर भारत के
एक अद्भुत
सन्त
स्वामी चिदानन्द

बाबा नीम करौली

उत्तरभारतकेएकअद्भुतसन्त

Baba Neem Karoli
A Wonder Mystic of Northern India

का हिन्दी अनुवाद

स्वामी हिदामन्द

MEDITATE SERVE LOVE REALIZE
THE DIVINE LIFE SOCIETY

अनुवाहदका
ब्रह्मिाररणी नीलमहण

प्रकाशक
द हिवाइन लाइफ सोसायटी
पत्रालय : हशवानन्दनगर-२४९१९२
हिला:   हटिरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड (हिमालय), भारत
www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org
प्रथम हिन्दी संस्करण : २०१७
(३,००० प्रहतयाँ)

न ःशुल्क नितरणार्थ

'द हिवाइन लाइफ सोसायटी, हशवानन्दनगर' के हलए
स्वामी पद्मनाभानन्द द्वारा प्रकाहशत तथा उन्हीं के द्वारा 'योग-वेदान्त
फारेस्ट एकिोमी प्रेस, पो. हशवानन्दनगर-२४९१९२,
हिला हटिरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड' में मुहित।
For online orders and Catalogue visit: disbooks.org

बाबा नीम करौली

उत्तर भारत के एक अद्भुत सन्त

ॐ श्री हनुमते नमः

परमहपता परमात्मा को श्रद्धापूववक नमन ! उन सववशक्तिमान् प्रभु को प्रणाम, िो आश्चयों के आश्चयव, सौन्दयों के सौन्दयव, ज्योहतयों ंकी ज्योहत, शक्तियों ंकी शक्ति तथा समस्त सत्ों ंके शाश्वत सत् िैं। उनकी हदव्य कृपा की वर्ाव समस्त प्राहणयों ंपर िो और सभी को आनन्द, शाक्तन्त एवं प्रकाश की ओर ले िाये। उनका प्ेरेम, करुणा एवं आशीवावद उनके आध्याक्तत्मक प्रहतहनहियों ंअथावत् सन्तों ंतथा पावन पुरुर्ों ंके माध्यम से िमें प्राप्त िो।

उत्तर भारत के अद्भुत सन्त, परम पूज्य एवं परम हप्रय श्री बाबा नीम करौली िी की पावन सूमृहत को श्रद्धापूववक नमन ! श्री बाबा नीम करौली िी उत्तर भारत के सिु-सन्तों ंएवं मिापुरुर्ों ंके िहमवक संघ में सवावहिक हवलक्षण एवं अहद्वतीय िैं। िआ िब मैं रािस्थान के ियपुर हिले में ग्रीष्मकाल की दोपिर में श्री बाबािी पर यि ी लेख हलखवा रिा हाँ; मुझे इस बात पर हबलुकुल आश्चयव निीं ंिोगा हक इस क्षण बाबािी इस तथ्य से पूणवतया पररहित िैं और वे भली-भाँहत िानते िैं हक मैं किाँ बैठा हाँ, हकन शब्ों ंका लेखन करवा रिा हाँ, हकस समय तथा हकससे लेखन करवा रिा हाँ यद्यहप श्रद्ेधेय बाबािी शारीररक रूप से िमारे मध्य निीं ंिैं, उन्ोंनें कुछ वर्व पूवव िी दि त्ाग हकया िै। यि कथन अनेक पाठकों ंको कुछ असामान्य िी प्रतीत िोगा तथा उन्ें आश्चयवहकत भी करेगा, तथाहप यि सत् िै। बाबािी के कई अन्तरंग हशष्ों ंएवं भिों ंने इस बात का व्यक्तिगत रूप से अनुभव हकया िै हक पूज्य बाबािी िानते थे हक दूरस्थ स्थानों ंपर रि रिे उनके भि एवं हशष् क्या कर रिे थे और क्या कि रिे थे यद्यहप बाबािी स्वयं उस समय हकसी अन्य स्थान में िोते थे। इसहलए उनके अहिकांशतः अनुयायी इस बात को पूणवरूपेण स्वीकार करते िैं हक श्री बाबा नीम करौली िी एक 'हसद्ध पुरुर्' एवं हत्रकालज्ञ थे अथावत् वे भूत, भहवष्, वतवमान तीनों ंकालों ंके ज्ञाता थे।

हपछली बार मुझे अकूटूबर १९७३ में परम पूज्य नीम करौली बाबािी के दशवन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक यात्रा के दौरान अल्मोडा से नैनीताल आते समय मैं कुमाऊँ पिाहडयों ंमें नैनीताल के समीप कैंिी में क्तस्थत उनके आश्रम गया था। िमने सायंकाल में यात्रा प्रारम्भ की थी और िब िम कैंिी पहुँिे, अँिेरा िो िुका था। शरद ऋतु िोने से राहत्र िोते-िोते ठंड बढ़ने लगी थी। िमारे समूि का एक सदस्य यि िानने के हलए पिले आश्रम गया हक बाबािी आश्रम में थे अथवा निीं। ंबाबािी आश्रम में िी थे और उन्ोंनें िमें आश्रम आने का सन्ेदेश हभिवाया।

मैं और मेरे साथी टािव की रोशनी में सडक से नीिे उतरे तथा पववतीय झरने पर बने एक छोटे पुल को पार करके िमने आश्रम में प्रवेश हकया। आश्रम पूणवतया नीरव एवं शान्त था। मक्तन्दर के पुिारी िमें आँगन में हमले और एक छोटे कमरे की ओर ले गये। परम पूज्य बाबािी एक िारपाई पर बैठे थे; उन्ोंनें अपने शरीर पर एक कम्बल ओढ़ा हुआ था। उन्ोंनें अत्न्त कृपापूणव दृहि से िमें देखा और िारपाई के पास हबछी एक दरी पर बैठने का संकेत हकया। पूज्य बाबािी पालथी लगाये बैठे थे, अत: उनके िरणों ंपर प्रणाम करने िेतु मैं उनकी िारपाई के समीप झुका और उनकी गोद में अपने मस्तक को रखा। बाबािी ने अत्न्त मृदुल स्वर में किा, "ठीक, ठीक, बहुत अच्छा" और मुझे बैठने का संकेत हकया। िमारे समूि में एक आदशव युवक एवं आध्याक्तत्मक हिज्ञासु श्री योगेश बहुगुणा िी भी थे। वे एक तौहलए में ७ अथवा ८ सन्तरे लाये थे। श्री योगेश िी ने बाबािी के समीप रखी एक खाली टोकरी में सन्तरे रख हदये। इसके पश्चात् िमने संकीतवन हकया तथा कुछ क्षण मौन िो कर बैठे। विाँ से िाने की अनुमहत लेने से पूवव मैंने बाबािी से उनके स्वास्थ्य के हवर्य में पूछा तथा उनके द्वारा पूछे गये कुछ प्रश्ों ंके उत्तर हदये। इसके बाद बाबािी ने प्रसादस्वरूप सन्तरे हवतररत करना प्रारम्भ हकया। इस समय तक आश्रम के कुछ कायवकताव एवं भि भी दरवािे के समीप एकहत्रत िो गये थे। श्री योगेश िी अत्न्त आश्चयवहकत िो गये िब उन्ोंनें देखा हक बाबािी आठ सन्तरे देने के बाद भी उस टोकरी से पूववत् सन्तरे हनकालते रिे और िमारे समूि के सभी सदस्यों ंतथा विाँ एकहत्रत आश्रम सदस्यों ंको देते रिे। बाबािी ने कुल १८ सन्तरे प्रसादस्वरूप बाँटे। उस टोकरी में १० अहतररि सन्तरे किाँ से आये, िम समझ निीं ंपाये। केवल पूज्य बाबािी िी िानते िैं।

लगभग २३ वर्व पूवव १९५० के दशक में, मैंने पिली बार परम पूज्य नीम करौली बाबािी के हवर्य में सुना था। यि कुछ इस प्रकार हुआ। परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी हशवानन्द िी का आश्रम हटिरी गढ़वाल हिले में क्तस्थत िै। उस समय एक अत्न्त योग्य एवं श्रेष्ठ अहिकारी श्री आर. के. हत्रवेदी हिला महिस्टेरट थे। बाद में, वे मसूरी में 'नेशनल एकेिमी ऑफ एिहमहनस्टेरशन' के प्रथम िायरेक्टरस में से एक बने। श्री आर. के. हत्रवेदी के वृद्ध हपता उनके साथ नरेन्द्रनगर में रिते थे िो हक हटिरी गढ़वाल का हिला मुख्यालय िै। उनके हपता अत्न्त पहवत्र एवं
श्रेष्ठ सािक थे; उन्ोंनें अपने आन्तररक आध्याक्तत्मक िीवन का अच्छा हवकास हकया था। एक बार उन्ोंनें श्री गुरुदेव के दशवनाथव हशवानन्द आश्रम िाने की इच्छा अहभव्यि की। हिला महिस्टेरट श्री हत्रवेदी िी श्री गुरुदेव के प्रहत अत्न्त श्रद्धा रखते थे; वे प्रसन्नतापूववक अपने वृद्ध हपता को नरेन्द्रनगर से आश्रम लाये और उन्ोंनें गंगािी के तट पर क्तस्थत श्री गुरुदेव के कुटीर में उनसे भेंट की। संस्था का मिासहिव िोने के कारण, मैं िी उन दोनों अहतहथयों ंको गुरुदेव के समीप ले कर गया था। गुरुदेव ने मुझे विीं ंरुकने के हलए किा। उस समय श्री हत्रवेदी िी के हपता ने िमें बताया हक उनके गुरु नैनीताल के श्री बाबा नीम करौली िैं। िब उनसे उनके गुरु के हवर्य में कुछ बताने की प्राथवना की गयी, तो उन्ोंनें बाबािी के हवर्य में िमें बहुत सी बातें बतायीं ंतथा उनके हशष् के रूप में अपने अनुभव भी बताये। उन्ोंनें किा, “स्वामी िी, इस क्षण बाबािी यि िानते िैं हक मैं किााँ हाँ, क्या कर रिा हाँ तथा आपसे क्या कि रिा हाँ। िब मैं अगली बार उनसे हमलूाँगा, तो वे मेरे इन शब्ों ंको दोिरायेंगे तथा मुझे यि भी बतायेंगे हक इस समय मैं यिााँ आपके साथ था। वे सब िानते िैं। अब भी वे मुझे सुन रिे िैं।"

यि सब उन वृद्ध सज्जन ने बताया और इस प्रकार मैं बाबािी के असािारण व्यक्तित्व एवं शक्तियों ंके हवर्य में िान पाया। बाद में, मुझे बाबािी के कुछ अन्य भिों ंसे हमलने का अवसर प्राप्त हुआ; उन सबने भी इन तथ्यों ंकी पुहि की िै। बाबानीम करौली िी के कई भिों ंने उन्ें अनेकों ंबार एक िी समय में दो हभन्न स्थानों ंपर देखा िै। इन दोनों ंिी स्थानों ंपर बाबािी को केवल देखा निीं ंगया, अहपतु बाबािी उन भिों ंके साथ रिे, उनसे बातिीत की और यिााँ तक हक भिों ंद्वारा अहपवत अल्पािार भी ग्रिण हकया।

बाबािी के हवर्य में एक अन्य हवलक्षण बात उनका किीं ंआने एवं िाने का तरीका था। वे हबना हकसी पूवव सूिना के सिसा आपके समक्ष आ िाते थे। िाते समय वे लोगों ंको उनके पीछे आने से मना करते थे, वे कुछ िी कदम सडक पर िलते थे और हफर दृहि से ओझल िो िाते थे। इसके बाद उन्ें खोिना असम्भव था िािे कोई उनके पीछे दौड कर िाये अथवा हकसी वािन से िाये। यि केवल कुछ सौ गि की िी दूरी िोती थी िब वे सडक के एक मोड पर मुडते थे। इतना िी पयावप्त था और अगले क्षण उन्ें एक मील के क्षेत्र में किीं ंढूाँढ़ पाना अशक्य था। ऐसा माना िाता िै हक उन्ोंनें श्री िनुमानिी की उपासना की थी और उपासना से प्राप्त हसक्तद्ध से िी वे अनेक िमत्काररक कायव करते थे।

यि बात पूणवतया सत् िो सकती िै क्योंहक सभी िानते िैं हक अनेक सुन्दर एवं भव्य िनुमान मक्तन्दरों ंका हनमावण पूज्य बाबािी की प्रेरणा एवं उनके व्यक्तिगत हनरीक्षण में हुआ िै। श्री िनुमान िी के ये मक्तन्दर असंख्य भिों ंके हलए अत्हिक आकर्वण के केन्द्र िैं। इस प्रकार का एक सवावहिक सुन्दर एवं भव्य मक्तन्दर लखनऊ में भी िै। कैंिी में बाबा नीम करौली आश्रम में स्थाहपत श्री िनुमान िी का हवग्रि भी आरािना का केन्द्र िै। वृन्दावन में भी एक आकर्वक िनुमान मक्तन्दर िै।

कुछ भि यि भी किते िैं हक पूज्य बाबािी ने आकाश- गमन की हसक्तद्ध प्राप्त कर ली थी तथा वे एक क्षण में अपने इक्तच्छत स्थान पर पहुाँि िाते थे। वे पूणवतया अनासि थे। मुि स्वच्छन्द बिती वायु के समान वे वस्तु-पररक्तस्थहतयों ंसे सववथा अप्रभाहवत एवं अनासि रिते थे। अनासक्ति एवं असंगता के बाविूद भी, बाबािी दु:खी एवं पीहडत मनुष्ों ंके प्रहत अत्न्त करुणाशील थे। वे हकसी की सच्ची प्राथवना को अस्वीकृत निीं ंकरते थे। कि से सन्तप्त मनुष्ों ंके हलए वे स्नेिपूणव करुणा से पररपूणव थे तथा समाि के गणमान्य व्यक्तियों ंसे अपने सम्पकव के प्रभाव से उनके किों ंका हनवारण करते थे।

अपने व्यक्तिगत िीवन में बाबािी अहतसंयमी थे तथा शरीर पर मात्र एक कम्बल िारण करते थे। उनके हृदय में सभी आध्यात्त्मक संस्थाओं ंके प्रहत मिती सद्भावना थी। मुझे यि भी अनुभव िोता िै हक अपने समकालीन अनेक सन्त-मिापुरुषों ंसे उनका आन्तररक सम्पकव था। बाबािी का कायव पूणवतया व्यक्तिगत तथा पृथक् निीं ंथा। यि उस हवशाल कायव का िी एक भाग था हिसमें अनेक अन्य सन्त आध्यात्त्मक सिभाहगता एवं सहियतापूववक लगे हुए थे। अन्तमुवखी तथा अल्पभाषी स्वभाव के िोते हुए भी बाबािी अपनी दृहि अथवा संकेत
मात्र से अत्हिक स्नेि अहभव्यि करने में सक्षम थे। उन्ोंनें अनेकों ंहनराश हृदयों ंको सािस प्रदान हकया; वे असंख्य मनुष्ों ंके िीवन में शात्त्न्त लाये। अपने सच्चे हशष्ों ंएवं भिों ंके घरों ंमें वे पररवार के एक सदस्य के समान िी अत्हिक हप्रयपात्र थे। इसहलए उनके िारों ंअनुयाहययों ंके हलए उनका दिेत्याग एक व्यक्तिगत क्षहतस्वरूप था।

कई दशक पिले भारत में हब्रहटश शासन के दौरान पूज्य बाबािी एक 'हसद्ध पुरुष' के रूप में पििाने गये। इस सम्बन्ध में एक किानी िै िो दहक्षण भारत के मिान् हसद्ध पुरुष श्री स्वामी हनत्यानन्द अविूत से िुडी किानी के समान िै। श्री स्वामी हनत्यानन्द िी केरल प्रान्त के िैं; बाद में वे मुम्बई के हनकट वज्रेश्वरी में रिने लगे। इन दोनों ंसन्तों ंसे िुडी ये घटनाएँ लगभग समान िैं।

एक बार बाबािी पूवी उत्तर प्रदेश में किीं ंभ्रमण कर रिे थे। िलते–लते वे रेलवे स्टेशन पहुँिे। एक टरेन विाँ रुकी हुई थी। बाबािी ने थोडी दूर टरेन से यात्रा करने का हविार हकया। वे टरेन में िढ़े और फस्टव क्लास कम्पाटवमेन्ट में बैठ गये। कुछ िी क्षणों ंमें टरेन ने िलना प्रारम्भ कर हदया। थोडी देर बाद एक हटकट िेकर (टी.टी.) आया और उसने उच्च श्रेणी कम्पाटवमेन्ट में एक सीिे-सादे ग्रामीण व्यक्ति (बाबािी) को बैठे देखा। वि बाबािी के पास गया और उनसे हटकट हदखाने को किा। बाबािी ने एक बार उसकी ओर देखा और उसके बाद उसकी बात पर ध्यान निीं ंहदया। वे गिन हिन्तन में मौन बैठे रिे। हटकट िेकर थोडा िोहित हुआ। उन हदनों ंअहिकांशतः रेलवे कमविारी हब्रहटश अथवा एंग्लो-इत्त्ण्डयन िोते थे। हटकट िेकर ने हफर से हटकट हदखाने को किा। बाबािी ने नकारात्मक मुद्रा में हसर हिलाते हुए उसे अपने खाली िाथ हदखा हदये। वि पररत्त्स्थहत को समझ गया और उसने कायविािी करने का हनणवय हलया। शीघ्र िी, एक गाँव के छोटे से स्टेशन पर टरेन रुक गयी। बाबािी को टरेन से उतरने का आदेश हदया गया। बाबािी इसकी अनुपालना करते हुए तुरन्त टरेन से उतर गये और कुछ कदम िूल भरे प्लेटफामव पर िल कर एक पेड की छाया में बैठ गये। िो कुछ घहटत हुआ, वे उससे पूणवतया अप्रभाहवत लग रिे थे। उनके िारों ंओर िोने वाले घटनािम पर उन्ोंनें ध्यान निीं ंहदया। कुछ क्षणों ंमें घंटी बिी, रेलवे गाडव ने िरी झण्डी हदखायी। इत्त्िन ने सीटी दी और िालक ने इत्त्िन स्टाटव हकया, परन्तु इत्त्िन स्टाटव निीं ंहुआ। अतः टरेन ििाँ की तिाँ खडी रिी। कुछ हमनट के बाद, गाडव टरेन से उतरा और इत्त्िन िालक के पास इत्त्िन के हवषय में पूछने गया। इत्त्िन में किीं ंकोई समस्या निीं ंथी, सब ठीक था। िालक ने पुनः सब िाँि की और इत्त्िन स्टाटव करने की कोहशश की। कोई पररणाम निीं ंहनकला। कुछ समय व्यतीत िो गया। स्टेशन मास्टर हित्त्न्तत िो गया। इस स्टेशन पर आने वाली एक अन्य टरेन को हकसी दूसरे स्टेशन पर रोका गया था। तार द्वारा सन्देश आने लगे। १५ हमनट, २० हमनट और आिा घंटा इस प्रकार बीत गया। हिन्ता बढ़ने लगी। तब रेलवे हवभाग का एक अिीनस्थ कमविारी स्टेशन मास्टर के पास गया तथा उसने पेड के नीिे बैठे बाबािी की ओर संकेत करते हुए बताया हक उन सन्त के प्रहत अपमानपूणव व्यविार के कारण यि त्त्स्थहत उत्पन्न हुई िै। उसने सुझाव हदया हक इस कहठन समस्या के हनवारण का एकमात्र उपाय बाबािी से क्षमा माँगना और उनसे पुनः टरेन में यात्रा करने की प्राथवना करना िै। गाडव एवं इत्त्िन िालक को यि सन्देश पहुँिाया गया। पिले तो उन्ोंनें क्षमा माँगने से उग्रतापूववक मना कर हदया। परन्तु कुछ समय बाद, उन्ें सद्बुत्त्द्ध आयी। वे बाबािी के पास गये, उन्ें सम्मानपूववक प्रणाम हकया और अपने अभद्र व्यविार की क्षमा यािना की। उन्ोंनें बाबािी से टरेन को आशीवावद देने की प्राथवना की तथा पुनः टरेन में बैठने के हलए आमत्त्ित भी हकया। बाबािी ने एक क्षण के हलए उन्ें देखा और किा, "ठीक िै, िलो। िम िलेंगे, िम िलेंगे।" िैसे िी बाबािी ने टरेन में पुनः प्रवेश हकया, इत्त्िन एक झटके

के साथ स्टाटव ो गया और टेरन इस प्रकार िलने लगी ैसे हक कुछ हुआ ी न ो। इसी बी वीाँ कुछ लोग एकहत्रत ो गये थे, उन्ोंनें अत्न्त उच्च स्वर में बाबािी की ियकार की। इस घटना के बाद से कभी हकसी रेलवे अहिकारी ने बाबािी की स्वच्छन्द टेरन यात्रा में बािा नीं ंािली।

गुरुदेव श्री स्वामी हशवानन्द ी मिारि की मिासमाहि के बाद बाबािी हकस प्रकार दो बार हशवानन्द आश्रम आये, इस हवर्य में बताकर मैं इस लेख को समाप्त करूाँगा। एक हदन अिानक अप्रत्ाहशत रूप से बाबािी आश्रम आ पहुाँिे। मेरे एक गुरुभाई श्री स्वामी हनमवलानन्द ी दौडते हुए मेरे पास आये और बाबािी के आगमन की सूिना दी। श्री स्वामी हनमवलानन्द ी को बाबािी के साथ कुछ असािारण अनुभव पूवव में ो िुके थे। मैं कमरे से बािर आऊाँ, इससे पिले ी बाबािी ऊपर मेरे बरामदे में पहुाँि िुके थे। मैंने उनके िरणों ंमें प्रणाम हकया, उनें् अन्दर ले गया तथा एक आसन पर बैठाया। बाबािी ने अत्न्त अनुग्रिपूववक आश्रम के अन्ेतेवाहसयों ं तथा आश्रम की गहतहवहियों ंके हवर्य में पूछा। मैंने उनके सभी प्रश्ों ंके उत्तर हदये और वे इससे अत्न्त सनु्तुि हदखायी हदये। उन्ोंनें किा, "बहुत अच्छा, बहुत अच्छा।" मैंने अपनी इच्छा अहभव्यि की हक वे यिााँ कुछ अल्पािार ग्रिण करें। वे दूि लेने के हलए सिमत हुए। गाय का दूि एवं ीनी लाये गये। उन्ोंनें कृपापूववक दूि ग्रिण हकया। इसी मध्य आश्रम के अन्य अन्ेतेवासी वीाँ आ गये थे। सबने बाबािी को प्रणाम हकया। मैंने बाबािी से उन सबका पररिय कराया। प्रसन्नता से प्रदीप्त उनका मुख सबके हलए आशीवावदस्वरूप था। उन्ोंनें आश्रम अस्पताल के कायव की सरािना की। वे कुछ समय तक िमारे साथ रिे। हफर उन्ोंनें किा हक वे अब ायेंगे और वे ाने के हलए खडे हुए । िम सब उनके पीछे िलने लगे। िब सीहढ़याँ उतर कर वे सडक पर पहुाँिे, उन्ोंनें आशीवावद िेतु अपना िाथ उठाया और साथ ी िमें रुकने तथा उनके पीछे नीं ंआने का संकेत हदया। इसके बाद उन्ोंनें सडक पर िलना प्रारम्भ हकया और शीघ्र ी वे दृहि से ओझल ो गये।

कुछ वर्ों के पश्चात्, इसी तरि एक हदन अिानक बाबािी पुनः आश्रम आये। इस बार वे ऊपर नीं ं आये। नीिे के एक कमरे में ी बैठे तथा आश्रम के सािकों ंएवं भिों ंको दशवन हदये। उन्ोंनें कुछ हिज्ञासुओं ंसे व्यक्तिगत भेंट की। कुछ घण्ों ंके बाद उन्ोंनें आश्रम से प्रस्थान हकया। आश्रम में उनका यि अक्तन्तम आगमन था।

दिे-त्ाग से पूवव बाबािी ने एक अमरीकी हिज्ञासु रिरिव एल्पटव के िीवन में पररवतवन लाकर कृपा एवं आशीवावदपूणव एक अत्न्त हवहशि कायव सम्पन्न हकया। अमरीकी िरग कल्ट के सुहवख्यात नेता तथा िाविव यूहनवहसवटी के भूतपूवव प्रोफेसर रिरिव नैहतक एवं आध्याक्तत्मक संकट की अवस्था से गुिर रिे थे िब बाबािी ने अत्न्त रिस्यपूणव रूप से उनें् अपनी ओर आकहर्वत हकया तथा अपने कृपा-कटाक्ष से आशीवावहदत हकया। उस प्रथम दशवन एवं आशीवावद से अशान्त रिरिव के िीवन में एक िमत्कार घहटत हुआ और शीघ्र ी वे एक आध्याक्तत्मक उपदेशक के रूप में पररवहतवत हुए; िो वे अपने िािारों ंअनुयाहययों ंद्वारा बाबा रामदास के नाम से ाने ाते ैं। इस किानी का वणवन रामदास की पुस्तक 'बी हिअर नाउ (Be Here Now)' में हकया गया ै। यि अत्न्त रोिक पुस्तक पूज्य बाबा नीम करौली ी एवं उनके अद्भुत और आश्चयवपूणव व्यक्तित्व के हवर्य में रुहिकर अन्तः दृहि प्रदान करती ै।

हवश्व-प्राथवना

ो सै्नि और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार िै, नमस्कार िै।
तुम सववव्यापक, सववशक्तिमान् और सववज्ञ िो ।
तुम सक्तच्चदानन्दघन िो । तुम सबके अन्तवावसी िो।

मिें उदारता, समदहशवता और मन का
समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृताथव करो।
मिें आध्याक्तत्मक अन्त:शक्ति का वर दो,
हिससे िम वासनाओं ंका दमन कर
मनीोय को प्राप्त िों।ं
मि अिंकार, काम, लोभ, घृणा, िोो और
दे्वेर् से रहित िों।ं
मिारा हृदय हदव्य गुणों ंसे पररपूररत करो।

मि सब नाम-रूपों ंमें तुम्हारा दशवन करें।
तुम्हारी अिवना के िी रूप में इन नाम-रूपों ंकी सेवा करें।
सदा तुम्हारा िी स्मरण करें।
सदा तुम्हारी िी महिमा का गान करें।
तुम्हारा िी कहलकल्मर्िारी नाम िमारे अिर-पुट पर िो।
सदा िम तुममें िी हनवास करें।

-स्वामी नशिा न्द